‘कपिलवस्तु महोत्सव’ के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

उत्तर प्रदेश राज्य के सिद्धार्थनगर जिले में प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले इस ‘कपिलवस्तु महोत्सव’ में आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

हमारे देश को ‘बुद्ध की भूमि’ भी कहा जाता है। हमारे यहां लगभग 2500 से 2600 साल पुरानी बौद्ध विरासत मौजूद है, जिनमें से कई पुरातात्विक स्थल भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े हैं और सिद्धार्थनगर जिले में ही मौजूद हैं। इस जिले का नाम राजकुमार सिद्धार्थ के नाम पर रखा गया है – जो भगवान बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति से पहले का नाम था। इस क्षेत्र में मौजूद कपिलवस्तु नगर का नाम कपिल ऋषि के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने यहां ध्यान किया था, और यहीं युवा सिद्धार्थ ने अपने जीवन के शुरुआती 29 वर्ष बिताए थे, उसके पश्चात्, 12 वर्षों की तपस्या के बाद उन्हें निर्वाण की प्राप्ति हुई थी।

तथागत ने समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए शांति, अहिंसा और करुणा के गुणों का प्रचार-प्रसार करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

ऐसे भगवान तथागत के सम्मान में इस स्थान पर हर वर्ष मनाए जा रहे इस उत्सव की परंपरा को जारी रखने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार का उत्साह और इस दिशा में किए जा रहे प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय और सराहनीय है। मुझे यह बताया गया है कि वर्ष 1988 में सिद्धार्थ नगर जिला बनाया गया और संबंधित विधान सभा का नाम कपिलस्तु विधान सभा रखा गया। तभी से यह उत्सव मनाया जा रहा है।

इसके अलावा, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि प्रगतिशील भारत की स्वतंत्रता के 75वें साल का उत्सव मनाने की भारत सरकार की वर्तमान पहल ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ को ध्यान में रखते हुए, आयोजन समिति ने इस महोत्सव को बहुत ही सूझबूझ से इस पूरे उत्सव की अवधारणा और योजना के साथ जोड़ा है।

मुझे आशा है कि जैसी परिकल्पना की गयी है , इस पर्व से निश्चित रूप से लोगों की जानकारी बढ़ेगी और उनकीआशाएं और आकांक्षाएं सकारात्मक रूप से प्रभावित होंगी। उनमें नई ऊर्जा का संचार होगा जिससे कि वे भारत को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने और उसे आत्मनिर्भर बनाने के कार्य में और अधिक मनोयोग एवं सक्रियता से जुड़ सकेंगे।

यदि मैं उत्तर प्रदेश राज्य की इस वर्ष की प्रमुख उपलब्धियों और चालू वर्ष के दौरान मनाए गए पर्वों व उत्सवों को स्मरण करूं तो यह साफ पता चलता है कि इनका उद्देश्य राज्य के किसानों के हितों को आगे

बढ़ाना रहा है। राज्य भारत सरकार के आत्मनिर्भर अभियान और लोकल फॉर वोकल के अंतर्गत एक जिला एक उत्पाद योजना के भाग के रूप में मुख्यतः चुनिन्दा उत्पादों का संवर्धन, विपणन और ब्रैंडिंग कर इस मार्ग पर सफलतापूर्वक अग्रसर हुआ है।

वस्तुतः, इन उत्पादों को बढ़ावा देने से किसानों की आय को दुगुना करने में सहायता मिलेगी। साथ ही, इससे निवेश आकर्षित होगा और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

इस सूची में इस वर्ष के आरंभ में झाँसी में आयोजित स्ट्राबेरी फेस्टिबल तथा मार्च 2021 में लखनऊ में आयोजित गुड़ फेस्टिवल और सिद्धार्थनगर में आयोजित काला नमक राइस फेस्टिवल शामिल है। मैं इस मंच का उपयोग उन नए प्रयोगों का उल्लेख करने के लिए करना चाहता हूँ जो बुंदेलखंड क्षेत्र के हमारे किसानों ने कृषि क्षेत्र में शुरु कर संभावनाओं के नए क्षितिज बना दिए हैं।

इस सूखी भूमि पर स्ट्राबेरी की खेती करने का विचार पहले कभी नहीं आया। जबकि आज यह एक वास्तविकता है और इस क्षेत्र में विशिष्ट प्रकार की मृदा होने के कारण यह संभव हो पाया है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है स्ट्राबेरी फेस्टिवल के माध्यम से राज्य ने इस संकल्पना को साकार किया है।

मेरी यह दृढ़ धारणा है कि ये उल्लेखनीय माइलस्टोन और उपलब्धियां अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय है।

जहां तक काला नमक चावल का संबंध है, मैं इस चावल की किस्म के इतिहास से जुड़े रोचक तथ्यों और रहस्यों को जानकर आश्चर्यचकित हूं। भारत के उच्च गुणवत्ता वाले सुगंधित चावल के रूप में प्रसिद्ध इस चावल के बारे में ऐसा माना जाता है कि इसे सिद्धार्थ ने लोगों को प्रसाद के रूप में दिया था और उन्होंने ऐसी भविष्यवाणी की थी कि 'इस चावल में एक विशिष्ट सुगंध होगी जिससे लोग उन्हें सदैव याद रखेंगे।' आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर चावल की इस किस्म के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ हैं। इसलिए, एक प्रकार से इस चावल की सुगंध को भगवान बुद्ध का आर्शीवाद माना गया है। ऐसा भी माना जाता है कि उन्होंने यह भी कहा था कि यदि चावल की इस किस्म को कहीं और बोया जाए तो इसकी सुगंध और गुणवत्ता नष्ट हो जाएगी।

जहां इस फसल को सर्वप्रथम उगाया गया था उस बहुत ही सीमित भौगोलिक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए और इस फसल को बनाए रखने के लिए वर्ष 2013 में इस किस्म को जी.आई का टैग दिया गया। इस पर केंद्रित शोध और प्रौद्योगिकीय पहलों के माध्यम से राज्य ने चावल की इस किस्म की उपज और गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं।

'कपिलवस्तु' का बौद्ध धर्म में अत्यंत महत्व है। इस उद्देश्य से भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने 'स्वदेश दर्शन योजना' और 'प्रसाद योजना' के अंतर्गत इस शहर को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने के लिए इस क्षेत्र में बौद्ध सर्किट स्थापित करने के लिए धनराशि जारी की है। इस क्षेत्र के महत्व को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य ने जिले में विश्वविद्यालय और संग्रहालय की स्थापना जैसी विकासात्मक पहल की हैं।

सिद्धार्थनगर जिले के पुरातात्विक स्थलों से खुदाई के पश्चात् मिले बौद्ध काल के अवशेषों को संग्रहालय में रखा गया है और प्रदर्शित किया गया है। मैं इस बात से अवगत हूं कि इस क्षेत्र तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित करने सहित जिले में अनेक अन्य पहलों पर कार्य जारी है। मुझे आशा है कि निस्संदेह इस क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

कपिलवस्तु महोत्सव 2021 के सांस्कृतिक, साहित्यिक और मनोरंजक कार्यक्रमों में कई प्रकार के सूचनाप्रद और प्रेरणादायी कार्यक्रम तथा वर्कशॉप शामिल हैं । मैं आशा करता हूं कि इन समारोहों में लगभग सभी आयु वर्ग के लोग भाग लेंगे। इस महोत्सव में विशेष तौर पर स्थानीय कलाकारों के कार्यक्रम भी हैं जो इस क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा के संरक्षण के कार्य को आगे बढ़ाने के साथ-साथ स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच भी प्रदान कर रहे हैं।

कोविड-19 वैश्विक महामारी के इस समय को ध्यान में रखते हुए और देश के हर हिस्से और जनसंख्या के हर आयु वर्ग एवं तबकों की सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंच को देखते हुए ,इस कार्यक्रम के आयोजकों ने ग्राफिक डिजाइनिंग, फोटोग्राफी, फिल्म-निर्माण, ऑनलाइन मीडिया सामग्री सृजन, प्रश्नोत्तरी, आदि जैसे क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा तथा हिस्सेदारी के लिए समुचित योजना बनाकर ऑनलाइन एंट्री की व्यवस्था की है। इससे देश के अलग-अलग हिस्से के लोग भागीदारी कर सकेंगे और साथ ही, नवीन विचारों की उत्पत्ति का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

इस समारोह के माध्यम से विचारों के आदान प्रदान से लोग लाभान्वित होंगे और उन्हें एक समाज के रूप में फलने-फूलने का अवसर मिलेगा तथा उभरती प्रतिभाओं के संवर्धन का मार्ग मिलेगा।

मुझे विश्वास है कि विभिन्न सरकारी विभागीय जोन्स के आकर्षक स्टॉलों के माध्यम से लोगों को सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जागरुक होने का अवसर मिलेगा । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन मेलों और उत्सवों के माध्यम से कॉमर्शियल जोन

स्टॉल की प्रतिभागी व्यवसायिक इकाइयों को भी लाभ मिलेगा और वहां जाने वाले लोगों को भी फायदा मिलेगा।

अंत में, अपनी बात समाप्त करने से पूर्व मैं एक बार फिर उत्तर प्रदेश सरकार और इस कार्यक्रम के आयोजकों को बधाई देता हूं। मैं इस कार्यक्रम की भव्य सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं भी देता हूँ।

धन्यवाद।